सौजन्य से :

1. सतीश कुमारसाहू
10 , विवेकानंद नगर,
रायपुर (छ.ग.)
मोब.नं. : 9977456111

2. अनूप बंसल
संयोजक
भारत स्वाभिमान ट्रस्ट
भिलाई (छ.ग.)
मोब.नं. : 9425245807

स्वदेशी अपनाएं, देश बचाएं
करें योग, रहें निरोग

कृषि मित्र

(किसानों के स्वालंबन हेतु कृत संकल्प)

* कृषि मित्र
* लेखक – रेसनराज डनसेना
* प्रकाशक – रोशन राज डनसेना
भारत स्वाभिमान ट्रस्ट
सरिया इकाई (छ.ग.)
* संस्करण – तृतीय, वर्ष २०१०
* सहयोग राशि – 5 रूपये मात्र
* संपर्क – डी.आर.डी. कॉम्पलेक्स
मेन रोड़ , सरिया
जिला – रायगढ़ (छ.ग.)
फोन : (07768) 267216, 267217
मोब.नं. :
* मुद्रक – विजय प्रिन्टर्स, सरिया
फोन : (07768) 267206

KRISHI MITRA
BY
ROSHAN RAJ DANSANA

विनम्र अनुरोध ,
मेरे किसान भाईयों,

मेरा आपसे एक अनुरोध है कि आज की विषम परिस्थिति को देखते हुए स्वालम्बन कृषि की ओर लौटें।

रासायनिक खाद कीटनाशक व यांत्रिकी खेती पर अनावश्यक खर्च करते हुए आज किसानों की दशा दयनीय हो गई है। उपज बढ़ाने की लालसा में हमने अपनी माँ समान धरती का अप्राकृतिक रूप से दोहन किया है।

पश्चिमी मान्यताओं की तर्ज पर हमें यह सिखाया जा रहा है कि धरती "रिसोर्स" है। इससे आप जितना निकाल सकते हैं निकाल ले पर हमारी संस्कृति भिन्न है। गीता में कहा गया है कि परस्पर भावयन्तः श्रेयः परमावाप्स्यथ अर्थात् एक दूसरे की रक्षा करके परस्पर कल्याणकारी बनों।

परन्तु इसके विपरीत हम अपनी धरती को रासायनिक खाद व कीटनाशक का नशा डाल कर बंजर बनाने पर तुले हैं। आज के बाजारवादी युग में कुछ लोग हमारे कृषि को व्यापार बनाने पर तुले हुए हैं , ताकि किसान इस चक्रव्युह में फंसकर अपना अस्तित्व ही खो बैठें।

तथाकथित प्रगतिवादी कुछ लोगों का मानना है कि हमारी जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। हम 115 करोड़ भारतीयों को अधिक खाद्यान्न उत्पादन करने की आवश्यकता है जिसके लिए रासायनिक खाद कीटनाशक कृषि का यांत्रिकीकरण जरूरी है। परन्तु हम कहते हैं कि 115 करोड़ वाले देश में बेवजह यांत्रिकीकरण कर हम 200 करोड़ हाथों में बेरोजगार नही बना रहें है ? ट्रेक्टर जैसे भारी मशीनों का खेती में प्रयोग करके हम अपने गो वंश को नकारा बनाकर कत्ल कारखाने में कटने के लिए भेज रहे हैं। आज हिन्दुस्तान में सरकार द्वारा स्वीकृत 3600 कारखाने में 50000 के लगभग गो वंश कटते हैं। क्या इन आंकड़ों को देखकर हमें शर्म नहीं आती महज चन्द विदेशी डालरों के मोह में पड़कर मातृ सदृश्य गो वंश का कत्ल करवाकर उसका मांस निर्यात करते हुए हमारी आत्मा कांपती क्यों नहीं।

सबसे अहम् बात है कि 500 साल के इस्लामी और 150 साल के अंग्रेजी राज में जितनी गौ हत्या हुई होगी उससे 100 गुना से ज्यादा हमारी वर्तमान सरकार मेंहो रही है। अब तो हमारी अपनी सरकार है सत्ता में हमारे चुने हुए लोग हैं , फिर सरकार किसके हितों को ध्यान में रखते हुए अपनी अगली योजनाओं में हजारों कत्ल खानों को स्वीकृत कर रही है। क्या इन सवालों का कोई उत्तर है हमारे पास। या फिर इन सवालों के जवाबदेही का जिम्मेदार कौन है ?

किसान भाइयों से मेरा अनुरोध है कि गौ वंश हमारे कृषि व्यवस्था का आधार है और इसकी रक्षा की सबसे बड़ी जिम्मेदारी हम कृषकों पर है। अतः परम्परागत कृषि को बढ़ावा देकर गोबर, गो मूत्र एवं गौ वंश से खेती करें ताकि हम किसान अपने गौरवशाली परम्परा को कायम रख सकें और आने वाली पीढ़ी को कर्जमुक्त समाज दे सकें।

इस संदर्भ में इस पुस्तिका के माध्यम से पारम्परिक कृषि पर कुछ प्रकाश डाल रहा हूं , आशा है इन सहज व सरल उपायों को पनाकर अपनी खेती में होने वाली अनावश्यक खर्च को कम कर सकें तथा दूसरे किसानों को भी प्रेरित कर सकें।

आपका शुभचिंतक :

रोशन राज डनसेना

सरिया

जिला रायगढ़ (छ.ग.)

अपने घर में उपलब्ध सहज साधन से करें कम खर्च की खेती :

वैसे तो यहां बतायी जा रही सभी विधियां हमारी पूर्वजों की देन है जिसे हमने भूला दिया है और आज जब हमारी कृषि व्यवस्था व्यापारियों की गुलाम होती जा रही है हमें पुनः अपनी पारंपरिक कृषि तकनीकी की ओर लौटना होगा जहां कर्ज और बाजारवाद के सरकारी और गैर सरकारी व्यवस्था से मुक्त हो किसान गोबर और गौ मूत्र से खेती करें और सुख की सांस ले सके।

हमें इस मूल मंत्र को याद रखना होगा कि कृषि हमारे जीवन जीने की प्रक्रिया है और इसे हम व्यापार बनने नहीं देंगे स्वालम्बन खेती करते हुए अपनी मेहनत और बुद्धि से अपने घर में ही उपलब्ध साधनों को प्रयोग करके कम से कम लागत पर कृषि करें , ताकि हम स्वयं सुखी हों और अपने आने वाली पीढ़ी को कर्ज मुक्त कृषि समाज दे सकें।

हमें खेती के लिए क्या चाहिए :

हमें खेती में मूल रूप से 6 चीजों की आवश्यकता होती है – बीज, हवा, पानी, प्रकाश , मिटट्री और खाद। इनमें से चार वस्तुएं तो हमें प्रकृति ने बिना मोल के दिए हैं, परन्तु जो चीजें बच जाती हैं बीज और खाद उनमें स्वार्थी लोगों ने अपनी राजनीति घुसा दी है जिसका परिणाम यह हो रहा है कि आज किसान सरकारी बीज (हाईब्रीड) और रासायनिक खाद के चक्रव्यूह में फँसकर मर रहा है और व्यापारी तथा सरकार पैसे और वोट के रूप में अपना हाथ सेंक रही है।

बीज :– प्रायः लुप्त हो रही पुराने बीजों को बचाये। जिसे धन की पुरानी किस्म दुबराज, जवां फुल, दया , रामजीरा इत्यादि। इस तरह कम से कम हमारे यहां 24000 धान की प्रजातियां है।

देशी बीज लगाने के लाभ :

हमारे यहां प्रचलित देशी बीजों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इन्हें पानी की कम आवश्यकता होती है।

किसी प्रकार के रासायनिक खाद व कीटनाशक की जरूरत नहीं पड़ती तथा खाने में स्वादिष्ट व स्वास्थ्य की दृष्टि से पुष्टिकारक है। आज जो किसान रासायनिक खाद व कीटनशक के चक्रव्यूह में फसे हैं देशी बीजों में इनकी आवश्यकता न होने की वजह से अनावश्यक खर्च और कर्ज से बचा जा सकता है।

हाई ब्रीड बीज की हानियाँ :-

आज अधिक उपज के लालच में किसान हाईब्रीड बीजों का प्रयोग कर रहे हैं जिनमें रासायनिक खाद जैसे :- यूरिया, डी.ए.पी., पोटास इफको इत्यादि देना जरूरी है और जिस फसल में आपने रासायनिक खाद डाला है उनमें रोग होने की संभावना बढ़ जाती है जिससे मजबूर होकर कीटनाशक का प्रयोग करना पड़ता है।

हवा प्रकाश :-

हवा प्रकाश प्रकृति ने हमें प्रचुर मात्रा में दी है।

पानी :

पानी सभी जीवों का प्राण है । इसका सदुपयोग करें। आज किसान दोहरी फसल कमाने के चक्कर में मोटर लगाकर जमीन से पानी का अनावश्यक दोहन कर रहे हैं। आज मात्र 5 वर्षो में स्थिति यह है कि पानी का स्तर बहुत नीचे पहुंच गया है और मोटर बंद हो गए हैं। अगर यही स्थिति रही तो आने वाले वर्षो में पानी की एक-एक बुंद के लिए तरसना होगा। अतः पानी का उचित उपयोग करें।

मिट्टी :-

आज जिस प्रकार की खेती हम कर रहे हैं जिसमें मिट्टी का सर्वनाश हो गया है और हमारी धरती धीरे-धीरे बंजर होती जा रही है। हमने अपने खेतों में रासायनिक खाद व कीटनाशक डालने की आदत डाल दी है , जिससे भूमि बंजर व कठोर होती जा रही है। अतः अपने खेतों में गोबर खाद का प्रयोग करें और जमीन को जीवनदान दें तथा कर्ज और खर्च से बचें।

ट्रेक्टर का उपयोग भूलकर भी खेती में न करें :-

यदि अपने खेत को खेल का मैदान की तरह सक्त कठोर और बंजर बनाना चाहते हैं तो ट्रेक्टर का खूब प्रयोग करें। और यदि आप चाहते हैं कि आपकी जमीन उपजाऊ बने तो गोबर गौ मूत्र से बने खाद का प्रयोग करें एवं अपने पारंपरिक हल, बैल से खेती करें जिससे आपकी जमीन और पैसा दोनों बचे। क्योंकि तीन टन वजन का ट्रेक्टर अपनी जमीन को रौंदकर उसमें से हवा निकाल देता है जिससे जमीन के पानी सोखने की क्षमता समाप्त हो जाती है और भूमि कठोर होकर बंजर हो जाती है।

ट्रेक्टर का उपयोग धान मिंजाई में भी न करें क्योंकि ट्रेक्टर की मिंजाई से प्राप्त पुआल (पैरा) पशुओं की खाने योग्य नहीं रहता और जल्दी सड़ जाता है। अतः अपने गौ वंश को बढ़ायें और कम खर्च करते हुए अन्न उपजायें।

ध्यान रहें, आज अमेरिका में रासायनिक खाद और ट्रेक्टर का उपयोग कर के उनकी जमीन इतनी कठोर हो गई है कि 100 हार्स पावर का ट्रेक्टर भी जुताई के लिए नाकाम हो गया है। अतः हमारे पास समय है हम अपने पारंपरिक कृषि औजारों का प्रयोग करके पूरे विश्व को एक नई दिशा दें।

हमें क्या करना है :-

आप पूछेंगे कि हम रासायनिक खाद कीटनाशक ट्रैक्टर इत्यादि का यदि प्रयोग न करें तो उसके बदले में किन विधियों का उपयोग करें।

मैं आप लोगों को कुछ सहज उपाय बता रहा हूं जिनके प्रयोग से आप रासायनिक खाद व कीटनाशक की खर्चीले प्रयोग से बच सकते हैं तथा स्वयं प्रयोग करें तथा अपने किसान भाईयों को भी प्रेरित करेंगे।

अमृत पानी बाद :

यह खाद जमीन को उपजाऊ बनाती है जिसके प्रयोग से केंचुए आकर्षित होते हैं और फसल में मिठास आती है।

अमृत पानी खाद बनाने की तिथि :

सामग्री :– एक पाव देशी गाय का घी, आधा किलो मधुरस, 10 किलो देशी गाय का गोबर , 200 लीटर पानी (15 बाल्टी लगभग):–

विधि :– सबसे पहले देशी घी को मधुरस में अच्छी तरह मिला ले फिर इसे 20 किलो ताजा गोबर में अच्छी तरह फेटकर मिला लें अब इसे 200 ली. पानी (15 बाल्टी लगभग) में मिला लें यह आपका अमृत पानी खाद है। यह एक एकड़ के लिए पर्याप्त है।

प्रयोग विधि :– जिस जमीन में खेती शुरू करनी है उसमें एक समान जुताई से पहले छिड़क दें। फिर फसल लगाने के 20–25 दिन बाद फिर एक बार जमीन में डाले फसल के ऊपर न डालें इस तरह हर वर्ष 2–3 साल तक अपने खेत में इस खाद को डालें इस तरह हर वर्ष 2–3 साल तक अपने खेत में इस खाद को डालें इस खाद के प्रयोग से हर साल आपकी पैदावार बढ़ेगी तथा साथ–साथ आपकी जमीन और उपजाऊ बनती जायेगी। इस खाद का प्रयोग किसी भी फसल के लिए कर सकते हैं।

लाभ :– इस खाद के प्रयोग से आपकी जमीन पर केचुएँ आकर्षित होंगे तथा रासायनिक खाद के प्रयोग से बर्बाद हुए खेतों को नया जीवन मिलेगा।

हण्डी खाद

हण्डी खाद का प्रयोग आप किसी भी रासायनिक खाद की जगह उपयोग कर सकते हैं। बाजार में उपलब्ध हानिकारक रासायनिक खाद से आप मात्र 2–3 तत्व ही पाते हैं परन्तु हाण्डी खाद के प्रयोग से पौधों को आवश्यक 23 तत्वों की पूर्ति होती है और खरीदने की हमें कोई आवश्यकता नहीं।

सामग्री :– 10 किलो ताजा गोबर गाय या बैल का, 10 किलो गौ मूत्र, 10 किलो पानी , एक पाव गुड़ (पुराना हो तो अच्छा है), 5 किलो नीम पत्ती, किसी भी पुराने पेड़ जैसे – पीपल या बड़ के नीचे की मिट्टी 1 किलो।

विधि :–ऊपर दी गई सामग्री को एक मिट्टी की हण्डी में डालकर अच्छी तरह मिला लें। फिर ढ़ाँक कर ढ़क्कन को मिट्टी से सील बंद कर दें ताकि उसकी गैस न निकल पायें । फिर उसे 10 दिन के लिए छोड़ दें ताकि 10 दिन के बाद उसे खोलें और इसमें 200 लीटर (15 बाल्टी) पानी मिलाकर खड़ी फसल में छिड़कें या फिर उसमें चुल्हें की राख मिलाकर उसे सुखा बना लें और एक एकड़ खेत में छिड़कें। (जो सुविधाजनक हो)

खेत में डालने की विधि :–

एक हण्डी खाद की मात्रा एक बार में एक एकड़ खेत के लिए पर्याप्त है। इसे आप पानी या राख में मिलाकर पानी फसल में डाल सकते हैं जैसे धान की फसल में पानी भरा रहने पर हमें इसे राख में मिलाकर सुखा बनाकर डाल सकते हैं।

फसल में कितनी बार प्रयोग करें :– आप जिस प्रकार खेतों में रासायनिक खाद जैसे पोटास , यूरिया इत्यादि देते हैं उसकी जगह इसको दे सकते हैं। उदाहरण के लिए धान के खेत में तीन बार दिया जा सकता है। एक हण्डी बोनी या रोपाई के समय एक हण्डी बियासी के समय आखरी हण्डी फुल (पौरी) लगते समय डालें। इस प्रकार धान के फसल में तीन बार डालें। इसके डालने के बाद आपको अलग–अलग रूप में रासायनिक खाद जैसे पोटास , यूरिया, सुपरफास्फेट डालने की जरूरत नहीं है।

विशेष :– इसकी प्रयोग किसी भी प्रकार से साग–सब्जी और फसल पर कर सकते हैं , ध्यान रहें इसे एक एकड़ में एक हण्डी ही डालें ज्यादा न डालें भले ही कुछ दिन बाद फिर डालें।

गौ–मूत्र

गौ मूत्र खाद और दवा दोनों का काम करते है। जैसे धान के फसल में तीन बार देना पर्याप्त है।

पहला छिड़काव :– धान रोपने के 10–15 दिन बाद। स्प्रेयर में 75 मि.ली. मात्रा गो मूत्र की डाल कर एक एकड़ खेत में लगभग 6 बार स्प्रे करें।

दूसरा छिड़काव :- दूसरा छिड़काव धान बियासी के समय। स्प्रे पानी में 125 मि.ली. मात्रा गो मूत्र की डालकर एक एकड़ में 70-80 लीटर स्प्रे करें।

तीसरा छड़काव :- तीसरा छिड़काव फूल आने (धान पौरी) के समय 1 ली. पानी 125 मि.ली. डालकर एक एकड़ में 70-80 लीटर स्प्रे करें।

लाभ :-

१. गौ-मूत्र छिड़काव से फसल पर रोगों का आक्रमण नहीं होता।

२. दाने वजनी होते हैं।

३. बदरा नहीं जाता।

४. पौधों को सूक्ष्म सभी तत्वों को पूर्ति होती है।

५. हण्डी खाद और गौ मूत्र का प्रयोग आप धान पौधे (पल्हा) तैयार करने में भी कर सकते हैं।

विशेष :- किसी भी प्रकार के कीट प्रकोप होने पर। ढ़ोल/स्पीयर (15 लीटर) पानी में एक पाव गौमूत्र डालकर 10-15 दिन के अंतराल में स्प्रे करें, यह कीटनाशक का काम करेगा।

फसल पर होने वाली बीमारी :-

१. जमीन के अंदर जड़ों को काटने और सड़ाने वाले कीट।

२. फसल के ऊपर लगने वाली बीमारी

<u>फसल के जड़ों को काटने और सड़ाने वाले कीटों को दूर करने के उपाय:</u>

रोग होने के कारण :- यह रोग मिट्टी स्वस्थ्य न होने की वजह से होती है, जैसे धान में होने वाला एक मुख्य रोग गाँठ कीड़ा है।

गाँठ कीड़ा की रोकथाम :-

१. जैसे धान की खेती में चिखला करते समय यदि उसमें एक एकड़ में ऑक पत्ता (अर्क पत्ता) या बेशरम पत्ता (अमेरी पत्ता) 1-2 बोरा खेत में जगह-जगह बिखेर कर सड़ा दिया जाए तो गांठ कीड़ा का प्रकोप नहीं होगा।

२. खेत में रासायनिक जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग न करें।

इससे मेंढ़क मर जाते हैं, मेंढ़क गांठ कीड़ा को खाकर हमारे फसल को बचाते हैं।

३. यदि बेशरम पत्ती या अर्क पत्ता डालने के बाद भी इसका प्रकोप होता है तो यह उपाय करें।

अ) एक किलो अदरक को थोड़ा पानी मिलाकर पीस लें और उसका रस निकाल लें और छान ले। मात्रा :- एक ठोस पानी में 100 मिली. रस डालकर एक एकड़ में 5-6 ढ़ोल स्प्रे करें। गांठ कीड़ा की समस्या खत्म हो जाएगी।

ब) आधा किलो तंबाखु लेकर उसे 5 ली. पानी डालकर अच्छी तरह उबाल लें। मात्रा :- एक ढ़ोल पानी में एक पाव तंबाखु पानी ओर एक पाव गौ मूत्र डालकर स्प्रे करें। (हमने यह अनुभव किया है कि रासायनिक खाद कीटनाशक न डालने पर गांठ कीड़ा की समस्या होती ही नहीं है।)

स) जमीन में नीम एवं करंज आदि की खली 10-15 किलो प्रति एकड़ हर वर्ष डाले जिसमें जमीन के अंदर होने वाली कीट प्रकोप से छुटकारा मिलेगा।

द) यदि गन्ना या केला के पौधों पर जड़ गलन या कीट प्रकोप होता है तो पानी से भरे खेतों में हींग का पानी अथवा नीम तेल बूंद-बूद डालें इससे कीट प्रकोप कम होगा।

फसल के ऊपर लगने वाले रोग एवं उनके अचूक देशी उपाय:- मेरा किसान भाइयों से एक विनम्र अनुरोध है कि रासायनिक खाद का प्रयोग अपने खेतों में बिल्कुल बंद कर दें क्योंकि यह रासायनिक खाद की कीट प्रकोप की असली जड़ है। रासायनिक खाद के प्रयोग से पौधों में अनावश्यक बढ़ोत्तरी होती है जो कीटों को आमंत्रित करती है वैसे अपने अनुभव से हमने यह पाया है यदि आप रासायनिक खाद को छोड़कर गोबर गौ मूत्र से खेती करें तो आपको कीट प्रकोप का डर नहीं रहेगा फिर भी यदि थोड़ा बहुत रोग का संक्रमण होता है तो हमारे पास फसल में होने वाली सभी बीमारियों के सहज, सुलभ एवं बिना खर्च के उपाय है।

जिन्हें हम प्रयोग करके जहरीले कीटनाशकों को खरीदने से बच सकते हैं। वैसे तो हर बीमारी के लिए बिना खर्च के उपाय हमारे पास उपलब्ध है जिनका उपयोग कई किसान भाईयों ने पिछले आठ वर्षो में किया है और जिसका वर्णन मैं किसानों के अनुभव के साथ विस्तार से लिखूंगा।

फिलहाल मैं आपको एक ऐसी दवा बनाने के विधि बता रहा हूं जिसका उपयोग आप किसी भी फसल और किसी भी रोग पर कर सकतें है। यदि आप इस दवा को बनाकर रखे लें तो आपको अपनी खेती में बाजार से जहरीले कीटनाशक खरीदने की कोई आवश्यकता नहीं होगी यह मेरा विश्वास है।

सब रोगों की एक दवा – ब्रम्हास्त्र

सामग्री :– एक बड़ी हांडी में (उसना हांडी) में तीन किलो नीम पत्ता या एक किलो नीम का बीज पिसा हुआ या 1 किलो खली जो भी मिल जाए, 10 लीटर गो मूत्र, 1 पाव तांबा तार, आधा किलो हरा या लाल मिर्च एक पाव लहसून, आधा लीटर मिट्टी तेल, पानी एक लीटर, आधा किलो तंबाखू (डंठल या कचरा रहे तो अच्छा है)

बनाने की विधि :– एक बड़ी मिट्टी की हांडी में 10 ली. गौ मूत्र तथा एक पाव तांबे का तार तथा नीम की पत्ती 3 किलो या 1 किलो नीम बीज का चुरा या 1 किलो नीम खली (जो भी उपलब्ध हो) डालें और अच्छी तरह ढ़ाँक कर 10 दिन के लिए रखें। 10 दिन बाद इस हांडी में रखी सामग्री को आधा होने तक उबालें उबलते समय इसमें आधा किलो तंबाखू का कचरा भी उसमें डाल दें। अब एक अलग बर्तन में हरा या लाल मिर्च को पीसकर आधा लीटर मिट्टी तेल में रात भर डुबाकर रखें। अब सुबह होने पर मिर्च और लहसून को निचोड़कर मिट्टी तेल और पानी को मिला लें और उसे गौ मूत्र, नीम पत्ता वाले द्रवण में ठंडा होने तक मिला कर अच्छी तरह घोल दें।

अंत में सबको अच्छी तरह छानकर एक प्लास्टिक जरीकेन में भरकर रखें आपकी दवा तैयार है। अब खेती के दौरान किसी भी फसल पर कोई भो रोग हो इसका उपयोग कर सकते हैं।

प्रयोग करने की विधि एवं मात्रा :–

इस दवा को आप 15 ली. पानी में 200 मि.ली. डालकर स्प्रे करें यदि ज्यादा प्रकोप हो तो 10–15 दिन बाद स्प्रे करें।

विशेष : १. इस तरह 10 लीटर गौ मूत्र से आप लगभग 7 ली. दवा बना सकते हैं। इतनी दवा से आप 7 एकड़ खेत में दवा छिड़क सकते हैं, इस तरह मात्र 30–35 रू. खर्च आएगा।

२. इसमें कोई रासायनिक तत्व न होने की वजह से यह स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक नहीं है।

३. इसमें प्रयुक्त होने वाली सभी वस्तुएं सहज ही हमारे गांव में उपलब्ध है।

किसानों द्वारा विभिन्न रोगों पर देशी दवाओं द्वारा प्रयोग के अनुभव

पिछले कुछ वर्षो से फसलों पर कीटों का प्रकोप बहुत हुआ है, क्योंकि इन वर्षो में रासायनिक खाद का अंधाधुन प्रयोग हुआ।

हमने अपने अनुभवों से यह देखा कि किसान एक बीमार के लिए 5–6 तरह के दवाओं का प्रयोग कर रहें हैं फिर भी कीट का प्रकोप कम नहीं हुआ, उल्टा किसान कर्ज के बोझ से और दब गया, जहां पर कोई कीटनाशक काम नही आया वहां पर किसानों को हम स्वयं दवा बनाकर खेत में प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया जिसका आशाजनक परिणाम सामने आये।

यहां पर कुछ किसानों के अनुभव का वर्णन कर रहा हूं आप इन किसानों की तरह निःशुल्क दवा बनाकर अपने खेतों में प्रयोग कर कीटनाशकों के मायाजाल से बच सकते हैं।

5) अपने पारंपरिक कृषि औजार जैसे नांगर, कांपर, बेलन इत्यादि का उपयोग पशु शक्ति द्वारा करके कम लागत में कृषि कार्य करें ताकि आपकी जमीन उपजाऊ बनी रहे।

6) पानी का समुचित प्रयोग खेती में करें। जैसे यदि बरसाती फसल धान करते हैं तो रबी फसल में धान ही न लगाएं बल्कि दलहन की फसल लगाएं जिससे आपके खेतों के नाइट्रोजन का स्थिरीकरण हो सके और आपको इसकी पूर्ति के लिए बाहर से खाद डालने की आवश्यकता न पड़े।

7) यदि संभव हो तो हर वर्ष रबी की फसल न लें ताकि खेतों को विश्राम मिल सके। एक वर्ष अन्तराल देने पर समाप्त हुए सूक्ष्म तत्वों की पूर्ति हो जाएगी और जमीन सजीव बनी रहेगी।

8) अपने खेतों में हमेशा पानी भर कर न रखें इससे जमीन रोगग्रस्त हो जाती है, अतः हर वर्ष रबी न करते हुए जमीन को सुखने का समय दें।

9) अपने खेतों के मेड़ों को मजबूत बनाएं एवं मेड़ पर पेड़ लगाएं ताकि आपके खेत की ऊपरी उर्वरा मिट्टी तेज हवा में न उड़ सके।

10) अपने गो वंश रखने के बाड़े (कोठा) का व्यवस्थित करें, गौ मूत्र को एकत्रित करने के लिए नाली की व्यवस्था बनाकर गड्ढे में गौ मूत्र को जमा करके उसका उपयोग हंडी खाद और कीटनाशक बनाने में करें।

11) यदि आपके पास जर्सी नस्ल की गाय या बैल है तो उन्हें तुरंत बेच दें क्योंकि इस जर्सी गाय की उत्पत्ति सुअर के वीर्य और गाय के रज से हुई है और इसके दूध के लगातार उपयोग से केंसर होने की संभावना है एवं जर्सी गाय की देखभाल के लिए विशेष व्यवस्था की आवश्यकता होती है जिसका खर्च एक भारतीय किसान वहन नहीं कर सकता जबकि हमारे यहां की देशी नस्ल की गाय रूखी सुखी घास खाकर भी हमें अमृत तुल्य पुष्टिकारक दूध एवं गोबर व बछड़े देती है जो हमारे कृषि में सहायक है। देशी गाय के गोबर व गोरस से भी अमूल्य है उसका मूत्र।

हमारे शास्त्रों में गौ मूत्र में गंगावास है, ऐसा कहा गया है कि और इसमें रोगों के निवारण की अदभूत क्षमता है। आज यहां विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है परन्तु केंसर जैसे रोगों के सामने बेबस है, वहीं गोमूत्र के सेवन से हमारों मरीज ठीक हो रहे है ।

इन्हीं गुणों के कारण हमारी संस्कृति में गाय को मां का सम्मान दिया गया है।

अतः आपसे निवेदन है कि अपनी मां का सम्मान करें वह हमें समृद्धि देगी क्योंकि गाय ही हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार है।

12) अंत में मै आप सब किसान भाइयों से एक बात कहना चाहूंगा कि अपने किसान होने पर गर्व करें। आपका ओहदा इस देश में रहने वाले किसी नेता या सरकारी नौकर के ओहदा से भी ऊंचा है, क्योंकि आप किसी के नौकर नहीं हैं और नहीं आपको किसी पद की लालसा है। आप अन्न का उत्पादन कर संसार का पोषण करते हैं। अतः अपना आत्म सम्मान बचाते हुए किसी व्यवस्था के आगे हाथ न फैलाएं अपनी कृषि अपने बुतें पर करते हुए स्वालंबन बनें।

राजीव दीक्षित द्वारा खाद बनाने की एक और विधि :

सामग्री : 15 किलो ताजा गोबर गाय या बैल का, 15 किलो गौमूत्र, 15 किलो पानी, 1 किलो गुड़ (पुराना हो तो अच्छा), 1 किलो बेसन (किसी भी दाल का), 1 किलो किसी पुराने पेड़ जैसे पीपल, बड़, नीम के नीचे की मिट्टी । विधि : ऊपर दी गई सामग्री को एक प्लास्टिक के ड्रम में डालकर अच्छी तरह मिला ले और इसे 15 दिन के लिए छोड़ दे, बीच-बीच में डंडे से हिलाते रहे (2-3 दिन में एक बार)। खेत में डालने के लिए हण्डी खाद के समान डाले।

आपके सहयोग हेतु सदैव तत्पर

रोशनराज डनसेना

(1)

किसान का नाम	:	रामनिवास पटेल, ग्राम – बोरे, जिला रायगढ़ (छ.ग.)
फसल	:	डालवा धान (स्वर्णा)
रोग	:	कीट प्रकोप (गुड़िया , फाफा)
दवा प्रयोग	:	1 पाव बबुल की पत्ती, 1 पाव तुलसी की पत्ती , दोनों को अलग–अलग मिट्टी के बर्तन में आधा–आधा ली. गो मूत्र डालकर 2 – 4 दिन तक सड़ाया, फिर दोनों को मिलाकर छान लिया गया।
प्रयोग मात्रा	:	1 ढ़ोल पानी में 100 मि.ली. डालकर स्प्रे किया।
निष्कर्ष	:	2–4 दिन में कीट प्रकोप समाप्त हो गया

(2)

किसान का नाम	:	लिंग प्रधान, ग्राम महाराजपुर जिला रायगढ़ (छ.ग.)
फसल	:	डालवा मुंगफली
रोग	:	पत्तों में छेद होने की समस्या
दवा प्रयोग	:	1 पाव लहसून को पीसकर , 1 ली. मिट्टी तेल में तथा एक पाव तीखा लाल मिर्च पीसकर 1 ली. पानी में अलग–अलग रात भर रखा , सुबह दोनों को मिलाकर छान लिए।
प्रयोग मात्रा	:	10 ली. पानी में 150 मिली. डालकर स्प्रे किया।
निष्कर्ष	:	रोग समाप्त हुआ जो नए पत्ते आए उनमें छेद नहीं हुआ।

(3)

किसान का नाम	:	गदाधर दास, ग्राम परसरामपुर जिला रायगढ़ (छ.ग.)
फसल	:	डालवा धान (महामाया)
रोग	:	गाँठ कीड़ा
दवा प्रयोग	:	1 किलो अदरक को 1 लीटर पानी में पीसकर रस निकाला।
प्रयोग मात्रा	:	10 ली. पानी में 200 मि.ली. डालकर स्प्रे किया।
निष्कर्ष	:	गांठ कीड़ा की समस्या दूर हुई।

(4)

किसान का नाम	:	गदाधर महाराज, ग्राम महाराजपुर जिला रायगढ़ (छ.ग.)
फसल	:	डालवा धान (महामाया)
रोग	:	भूरा माहू (चकड़ा रोग)
दवा प्रयोग	:	कंडे (छेना) की आग का धुआँ शाम को खेत में किया आग में 1 पाव अजवाइन (जुआनी) डाला गया, अगले दिन माहू कहीं भी नहीं था ।

(5)

किसान का नाम	:	हेमसागर प्रधान, ग्राम – भठली जिला रायगढ़ (छ.ग.)
फसल	:	गन्ना
रोग	:	गन्ने के तने में छेद (गाँठ कीड़ा)
दवा प्रयोग	:	1 किलो अदरक को 1 लीटर पानी में पीसकर रस निकाला, फिर एक पाव तम्बाखु को एक ली. पानी में फुलाकर पीस कर उसका रस निकाला तथा दोनों को